पाठ 24
बुन्देलखण्ड केसरी – महाराजा छत्रसाल

आइए सीखें . ■ साहस ■ शौर्य ■ आत्मविश्वास ■ वीरता ■ निर्भयता ■ धैर्य और कृतज्ञता की भावना। ■ शब्द–प्रयोग ■ काल परिवर्तन ■ उपसर्ग–प्रत्यय ■ संधि ■ मुहावरों का ज्ञान।

सत्रहवी शताब्दी के मध्य में सम्पूर्ण भारतवर्ष मुगल बादशाह औरंगजेब के कट्टर और अत्याचारी शासन से जूझ रहा था। पंजाब में गुरु गोविन्द सिंह, महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी और राजस्थान में वीर दुर्गादास राठौर मुगल सत्ता को चुनौती देकर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए लोहा ले रहे थे। बुन्देलखण्ड की वीर प्रसूता भूमि भी इस संग्राम से अछूती नहीं थी। इसी समय यहाँ महाराज छत्रसाल ने मुगलसत्ता को नाकों चने चबाने के लिए विवश कर दिया था।

बुन्देलखण्ड केसरी के नाम से विख्यात महाराजा छत्रसाल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया संवत सत्रह सौ छह (04 मई सन् 1649 ई.) को टीकमगढ़ जिले के मोर पहाड़ी नामक स्थान पर हुआ। इनकी माता का नाम लालकुँवरि और पिता का नाम चम्पतराय बुन्देला था जो नुना–महेबा के जागीरदार थे। वीर चम्पतराय आजीवन बादशाह शाहजहाँ और औरंगजेब के धर्मान्ध शासन और बहुसंख्यक प्रजा के प्रति पक्षपातपूर्ण नीतियों का विरोध करते रहे। मुगल सेना उनके पीछे पड़ी थी।

एक समय वीर चम्पतराय, रानी लाल कुँवरि और थोड़े से सैनिकों के साथ वन में रुके थे। रानी लाल कुँवरि वीरांगना नारी थीं। वे स्वयं युद्धों में भाग लेती थीं। सात माह के छत्रसाल एक पेड़ की डाल पर बँधे कपड़े के झूले में सो रहे थे। अचानक मुगलसेना की एक टुकड़ी ने आक्रमण कर दिया। घमासान लड़ाई छिड़ गई। वीर चम्पतराय की विजय हुई। जब शत्रु सेना भाग गई तब छत्रसाल का ध्यान आया। लौट कर देखा कि बालक छत्रसाल झूले में लेटे–लेटे किलकारियाँ भर रहे हैं।

छत्रसाल की सुरक्षा और शिक्षा के लिए उन्हें पाँच वर्ष की आयु में ही उनके मामा के पास दैलवारा गाँव भेज दिया गया। ग्यारह वर्ष की आयु तक पहुँचते–पहुँचते बालक छत्रसाल ने पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ अस्त्र–शस्त्र के संचालन में भी निपुणता प्राप्त कर ली थी। बालक छत्रसाल में साहस, शौर्य, आत्मविश्वास, वीरता और निर्भयता के गुण कूट–कूट कर भरे थे।

एक बार वीर छत्रसाल अपने कुछ साथियों के साथ घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहे थे । रास्ते में एक मंदिर दिखाई पड़ा। जहाँ मेला लगा था। मेले में आस–पास के गाँवों के नर–नारी आ–जा रहे थे। तभी कुछ मुगल सैनिक वहाँ आ गए। वे मंदिर और मूर्तियों को क्षति पहुँचाना और लोगों पर अत्याचार करना चाहते थे। वीर छत्रसाल ने उनको ललकारा और अकेले ही कई सैनिकों के साथ उनके नायक को भी मौत के घाट उतार दिया। बचे हुए मुगल सैनिक जान बचा कर भाग गए। लोग छत्रसाल की वीरता और युद्ध कौशल को देखकर दंग रह गए। सभी ने दाँतों तले अँगुली दबा ली।

शिक्षण संकेत– मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करें। गुरु गोविन्द सिंह, छत्रपति शिवाजी और वीर दुर्गादास के बारे में बताएँ। पाठ में उल्लिखित स्थानों को मानचित्र में दिखाएँ। राष्ट्रीय प्रेम से ओत–प्रोत गीत/कविता सुनाएँ।

वीर छत्रसाल का बाल्यकाल अभावों, कठिनाइयों और विपत्तियों में बीता था। वे अभी किशोर ही थे कि कुछ विश्वासघातियों के कारण उनके माता–पिता को आत्मोत्सर्ग करना पड़ा। उनके दुख का पारावार न रहा पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। वे अपनी विरासत की रक्षा के लिए व्यग्र हो उठे। वीर छत्रसाल मामा के घर से लौटकर अपने बड़े भाई अंगद राय के पास आ गए। यहाँ उनकी माता के मुँहबोले भाई महाबली ने अपने पास धरोहर के रूप में रखे उनकी माता के आभूषण और घोड़ा उन्हें सौंपा। इसी समय उनके पिता की इच्छानुसार उनका विवाह बेरछा के पँवार वंश की कन्या देवकुँवरि के साथ हो गया।

वीर छत्रसाल मुगलों से दो–दो हाथ करने से पहले उनकी रणनीति समझना चाहते थे। इस उद्देश्य की पूर्ति और सैन्य अनुभव प्राप्त करने के लिए वे औरंगजेब के सिपहसालार जयपुर नरेश राजा जयसिंह की सेना में सम्मिलित हो गए। राजा जयसिंह के साथ वीर छत्रसाल ने पुरन्दर, बीजापुर और देवगढ़ की चढ़ाई में भाग लिया। देवगढ़ के युद्ध में छत्रसाल ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। यहाँ तक की अपने प्राणों की बाजी भी लगा दी। वे इस युद्ध में बुरी तरह घायल हो गए। उनका प्यारा घोड़ा रात भर उनकी रक्षा करता रहा। दूसरे दिन छत्रसाल के भाई अंगद राय को पहचान कर ही घोड़े ने उन्हें शिविर में ले जाने दिया। स्वस्थ होने पर छत्रसाल ने अपने घोड़े को 'भले भाई' की उपाधि दी। बाद में एक युद्ध में मारे जाने पर महाराजा छत्रसाल ने धुबेला में भले भाई का स्मारक बनवाया।

देवगढ़ विजय में छत्रसाल के पुरुषार्थ को कोई महत्व नहीं दिए जाने पर छत्रसाल ने राजा जयसिंह का साथ छोड़ दिया। अब छत्रसाल का उद्देश्य भी पूरा हो गया था। उनका अगला ध्येय अपनी मातृभूमि से मुगलों के आधिपत्य को समाप्त करना था। इस कार्य में सफलता पाने के लिए छत्रसाल ने छत्रपति शिवाजी से भेंट की। छत्रपति ने उन्हें स्वाधीनता का मंत्र और अपनी तलवार देकर बुन्देलखण्ड में स्वतंत्रता का अलख जगाने भेज दिया।

वीर छत्रसाल अपनी जन्मभूमि पर लौट आए। उनके पास साधनों का घोर अभाव था। संगी साथी भी कम ही थे। उन्होंने अपनी माता के आभूषणों को बेचकर पाँच घोड़ों और पच्चीस सैनिकों की एक छोटी–सी सेना तैयार की। उनकी इस सेना में सभी वर्गों के लोग थे। यह एक सच्ची जन सेना थी जो अपनी स्वाधीनता, सम्मान और अत्याचार के विरोध में एक जुट हो गई थी।

वीर छत्रसाल ने सबसे पहले सहरा पर आक्रमण कर अपने माता–पिता की मृत्यु के लिए उत्तरदायी विश्वासघातियों को दण्डित किया। इसके बाद तो उन्होंने पीछे मुड़कर नही देखा। वे एक के बाद एक किलों पर अधिकार प्राप्त करते गए। उन्होंने सन 1671 (सोलह सौ इकहत्तर ई.) से लेकर सन् 1707 (सत्रह सौ सात ई.) तक सिरोंज, धामौनी, गढ़ाकोटा, एरच, भाड़ेर और कोंच आदि महत्वपूर्ण स्थानों को विजित कर लिया था। मुगलों से हुए युद्धों में उन्होंने मुनब्बर खाँ, अब्दुल समद, हमीद खाँ, फौजदार इखलास खाँ, किलेदार मुहम्मद अफजल, शाहकुली, दिलावर खाँ, रणदूल्हाँ खाँ, दिलेर खाँ आदि अनेक सेनापतियों को पराजित किया। धीरे–धीरे ओरछा और दतिया के राज्यों को छोड़कर पूरे बुन्देलखण्ड पर महाराजा छत्रसाल का आधिपत्य हो गया। उनकी राज्य सीमाओं के बारे में यह दोहा प्रसिद्ध है।

इत जमुना उत नरबदा, इत चम्बल उत टौंस।
छत्रसाल सौं लड़न की, रही न काहू हौंस।।

उन्होंने आरंभ में मऊ सहानियाँ के पास अपनी पूर्व जागीर महेबा के नाम पर एक नया गाँव बसाया। पन्ना को राजधानी बनाए जाने तक वे मऊ सहानियाँ में ही रहे। सन् 1683 (सोलह सौ तिरासी ई.) में उनकी भेंट महामति स्वामी प्राणनाथ से हुई। महाराजा छत्रसाल उनके शिष्य बन गए। स्वामी प्राणनाथ ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा।

छत्ता तेरे राज में, धक–धक धरती होय।
जित–जित घोड़ा मुख करे, तित–तित फत्ते होय।।

स्वतंत्र पन्ना की स्थापना और राज्य विस्तार के बाद उन्होंने प्रजा की सुख–शान्ति और समृद्धि के लिए प्रयत्न किए। स्वामी प्राणनाथ के निर्देश पर पन्ना राज्य में हीरों की खदानों की खोज करवाई। उन्होंने न्याय व्यवस्था को सरल बनाने के लिए पंचायती व्यवस्था स्थापित की। वे अपराधियों को कठोर दण्ड देते थे जिससे उनके राज्य में अपराध होना कम हो गए। उनके शान्ति पूर्ण राज्य में बच्चे–बूढ़े और स्त्रियाँ निर्भीकतापूर्वक कहीं भी आ–जा सकते थे। महाराज छत्रसाल जैसे तलवार के धनी थे वैसे ही कुशल और प्रजावत्सल शासक भी थे। उनका कहना था कि

राजी सब रैयत रहै, ताजी रहै सिपाहि।
छत्रसाल ता राज कौ, बार न बाँकों जाहि।।

वे एक अच्छे कवि थे। उनके दरबार में कवियों को पूरा सम्मान मिलता था। महाकवि भूषण के आगमन पर स्वयं महाराजा छत्रसाल ने उनकी पालकी में लगकर उनका सम्मान बढ़ाया था।

महाराजा छत्रसाल का अंतिम युद्ध सन् 1727 (सत्रह सौ सत्ताइस ई.) में इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मद बंगश से हुआ। अठहत्तर वर्ष की आयु होने पर भी उन्होंने बंगश का कड़ा मुकाबला किया। हजारों सैनिकों के बल पर बंगश ने महाराजा छत्रसाल को जैतपुर के किले में घेर लिया। बुन्देलखण्ड के अन्य राजाओं द्वारा सहायता न करने पर उन्होंने महाराष्ट्र के पेशवा बाजीराव प्रथम को एक मार्मिक पत्र लिखा–

जो बीती गजराय पर, सो बीती अब आय।
बाजी जात बुन्देल की, राखौ बाजीराय।।

पेशवा शीघ्र ही एक बड़ी सेना के साथ सहायतार्थ आ पहुँचे। बंगश को पराजित होकर पीछे हटना पड़ा। इससे प्रसन्न होकर महाराजा छत्रसाल ने पेशवा बाजीराव को अपना दत्तक पुत्र मानकर अपने राज्य का एक तिहाई भाग भेंट कर दिया। शेष दो हिस्से उन्होंने अपने पुत्रों हृदयशाह और जगत राज को दिए।

सन 1731 (सत्रह सौ इकतीस ई.) में भारत के इस महान सपूत का स्वर्गवास हो गया। धुबेला में स्थित उनका समाधिस्थल आज भी उनके शौर्य, तेज और ओज का स्मरण करा रहा है।

शंकर दयाल भारद्वाज –

श्री शंकर दयाल भारद्वाज प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। आपका जन्म सतना जिले के मैहर तहसील में ग्राम काँसा में 08 फरवरी 1957 को हुआ। आपकी प्रसिद्ध प्रकाशित पुस्तकें – कामदगिरि, नन्हावीर, जीवन–मूल्य, तुम चंदन हम पानी, बाल–पहेलियाँ, हमारे छत्रसाल आदि हैं। वर्तमान में आप "प्रेरणा" द्विमासिक पत्रिका के संपादक के साथ–साथ सरस्वती विद्यापीठ सतना में प्राचार्य पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहें हैं।

शब्दार्थ

प्रसूता–जन्म देनेवाली। **धरोहर**–अमानत, धाती, पूर्वजों से प्राप्त सांस्कृतिक विरासत अस्त्र– हाथ से चलाने वाले हथियार। **शस्त्र**–फेंक कर चलाने वाले हथियार। **क्षति**–हानि। **ललकार**–चुनौती देना। **आत्मोत्सर्ग**–स्वयं का बलिदान **पारावार**–असीम। **स्मारक**–स्मरण हेतु बनाई गई कोई रचना। **सिपहसालार**–सेनापति। **आधिपत्य**–अधिकार। **प्रजावत्सल**–प्रजा से पुत्रवत प्रेम करनेवाला। फत्तै (फतह)–जीत, विजय। **राजी**–प्रसन्न, सुखी। रैयत–प्रजा। **ताजी**–सजग, **चुस्त**–दुरुस्त। **बार**–बाल। **बाँकौं**–टेढ़ा।

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए?

(क) महाराजा छत्रसाल किस नाम से विख्यात हैं ?

(ख) महाराजा छत्रसाल का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

(ग) वीर चम्पतराय आजीवन किसका विरोध करते रहे ?

(घ) बालक छत्रसाल में कौन–कौन से गुण विद्यमान थे ?

(ड.) घोड़े को भले भाई को संज्ञा क्यों दी गई ?

(च) छत्रपति शिवाजी ने वीर छत्रसाल को कैसे प्रेरित किया ?

(छ) वीर छत्रसाल ने अपनी सेना कैसे तैयार की ?

(ज) स्वामी प्राणनाथ ने महाराजा छत्रसाल को आशीर्वाद देते हुए क्या कहा ?

(झ) महाराजा छत्रसाल की शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

- **खाली स्थान भरिए –**

(क) महाराजा छत्रसाल ने .... में 'भले भाई' का स्मारक बनवाया।

(ख) बुन्देलखण्ड की .... भूमि भी इस संग्राम से अछूती नहीं थी।

(ग) स्वामी प्राणनाथ .... के गुरु थे।

(घ) छत्रपति शिवाजी ने .... का मंत्र दिया।

(ड.) वीर छत्रसाल ने अपने दुश्मनों के .... दिए।

- **दिए गए उत्तरों में से सही उत्तर छाँटकर लिखिए।**

(क) महाराजा छत्रसाल ने पालकी में लगाकर सम्मान बढ़ाया–

(अ) भूषण का (ब) जगनिक का (स) सेनापति का

(ख) महाराजा छत्रसाल की समाधि स्थित हैं–

(अ) पन्ना में (ब) धुबेला में (स) महेबा में

(ग) वीर छत्रसाल का जन्म हुआ था–

(अ) मोर पहाड़ी पर (ब) गोर पहाड़ी पर (स) मड़ोर पहाड़ी पर

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों को वाक्य में प्रयोग कीजिए।

   स्वाधीन सम्मान समृद्धि शौर्य ओज निर्भय चुनौती उत्तरदायी

2. 'प्रसिद्ध' शब्द में 'प्र' उपसर्ग लगने से 'सिद्ध' शब्द के अर्थ में विशेषता और परिवर्तन आ गया है। 'प्र' उपसर्ग लगाकर बननेवाले तीन शब्द लिखिए।

3. निम्नलिखित शब्दों में आए मूल शब्द और प्रत्यय शब्दांश को अलग–अलग लिखिए।

   वीरता अछूती जागीरदार मार्मिक उत्तरदायी

4. निम्नलिखित वाक्यों को उनके सामने दिए गए काल के अनुसार बदलिए।

   महाराजा छत्रसाल का समाधिस्थल उनके शौर्य का स्मरण दिला रहा है।

   (भविष्यकाल) वे भारत के वीर सपूत थे। (वर्तमानकाल) शत्रु सैनिक जान बचाकर भागे।

   (भूतकाल)

5. संधि विच्छेद कीजिए।

   अत्याचार स्वाधीन इच्छानुसार आत्मोत्सर्ग सहायतार्थ

6. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए और वाक्य में प्रयोग कीजिए।

   दो–दो हाथ करना, छक्के छुड़ाना, नाकों चने चबाना, लोहा लेना

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए।

प्रसूता धरोहर अस्त्र शस्त्र क्षति ललकार आत्मोत्सर्ग पारावार स्मारक
सिपहसालार आधिपत्य प्रजावत्सल फत्तै (फतह) राजी रैयत ताजी बार बाँकौं

योग्यता विस्तार–

1. पाठ में वर्णित महान व्यक्तियों की जीवनियों का अध्ययन कीजिए।
2. इन महान व्यक्तियों के जीवन की किसी घटना पर आधारित नाटक या एकांकी का अभिनय कीजिए।
3. देश–प्रदेश की वीरांगनाओं की सूची बनाइए।
4. अपनी स्थानीय भाषा/बोली की कहावतों और मुहावरों को संकलित कीजिए।

विविध प्रश्नावली - 3

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

(क) छोटे जादूगर के पिता कहाँ थे और क्यों?

(ख) नरबदी कहानी आपको कैसी लगी?

(ग) राज्य पर आक्रमण होने पर अहिल्याबाई ने राघोवा का षड़यंत्र कैसे विफल किया?

(घ) कवि देश को तन, मन, धन क्यों समर्पित करना चाहता है?

(ड.) ज्ञानदा कहाँ और क्यों जा रही थी?

(च) 'खिलाड़ी-भावना' से क्या आशय है?

(छ) ब्रिटिश सरकार ने रमण को किस उपाधि से विभूषित किया और क्यों?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) जादूगर तो बिल्कुल.....................है।

(ख) माँ तुम्हारा.....................बहुत है।

(ग) तुम मेरे.....................ले लो मेरे बाबा को बचा हो।

(घ) खंडेराव युद्ध का संचालन करते हुए.....................को प्राप्त हो गए।

(ड.) व्यक्तिगत.....................से अधिक टीम का हित सर्वोपरि होता है।

(च) निर्भीक किसी.....................के सामने अपना सिर नहीं झुकाते।

(छ) रमण पहली बार सन्..................में विदेश गए।

(ज) भक्षक से.....................बड़ा होता है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ लिखिए -

(क) मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित।

(ख) मैं हूँ उनके साथ खड़ी,
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

(ग) कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य न उसे उबारे।

(घ) खेल मिल-जुलकर ही खेला जाता है। व्यक्तिगत उपलब्धि से अधिक टीम का हित सर्वोपरि होता है।

प्रश्न 4. वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

(क) मुहावरे

नाक में दम करना, नाकों चने चबाना, आँख दिखाना, पीठ दिखाना, गाल फुलाना।

(ख) शब्द

जीविका, प्रतिध्वनि, समर्पण, दूरदर्शिता, न्यायोचित।

प्रश्न 5. सही विकल्प चुनिए -

(क) 'चौमासा' शब्द में समास है।

द्वन्द्व, द्विगु, अव्ययीभाव

(ख) 'दुकानवाला' शब्द में प्रत्यय है।

दु, दुका, वाला

(ग) 'अभिमान' शब्द में उपसर्ग है।

अभि, अ, मान

(घ) 'लाभ' शब्द का विलोम है।

फायदा, नुकसान, हानि

प्रश्न 6.(क) निम्नांकित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए -

स्तबध, प्रगलभता, अतातायियों, चूनोती, स्परधा, प्रतीबिबं, विज्ञानिक

(ख) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए -

अंक, कर, उत्तर, कनक, पानी

प्रश्न 7. उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए -

ला — जवाब, वारिस, परवाह, पता

गैर — हाजिर, कानूनी, सरकारी, वाजिब

सु — कर्म, दूर, यश, वास

परा — जय, क्रम, भूत, भव

प्रश्न 8. निर्देशानुसार हल कीजिए -

(क) निम्नलिखित शब्दों का दो अलग-अलग अर्थों में प्रयोग कीजिए -

पता, डूबना, बढ़ना, खराब

(ख) निम्नांकित के विलोम शब्द लिखिए -

रात, सुखद, सफलता, संयोग, साक्षर

प्रश्न 9. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

कमल, पर्वत, सूर्य, पृथ्वी, हवा, पानी

प्रश्न 10. सही जोड़ी बनाइए -

हॉकी का गढ़	नोबल पुरस्कार
अहिल्या बाई	भोपाल
माँ	इन्दौर
डॉ.चन्द्रशेखर वेंकट रमण	राहुल

प्रश्न 11. किसने, किससे कहा -

(क) हाँ, मैं सच कहता हूँ, बाबूजी! माँ बीमार हैं, इसलिए मैं नहीं गया।

(ख) तू है हठी मानधन मेरे।

(ग) माँ मेरी क्या बानी।

(घ) बहन! मैं तो आपके पुत्र की मृत्यु पर आपसे संवदेना व्यक्त करने आया हूँ, युद्ध करने नहीं।

(ङ.) तब भी तुम खेल दिखाने चले आए।

प्रश्न 12. निर्देशानुसार हल कीजिए -

(क) राम अपनी पुस्तक पढ़ता है। (उद्देश्य और विधेय अलग कीजिए)

(ख) मोहन है वॉलीबाल जाता खेलने। (पदक्रम सही कीजिए)

(ग) राधा गाना गाती है। (भविष्यकाल)

(घ) वह बहुत अच्छा लड़का है। (प्रश्न वाचक)

(ङ.) माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए। (आज्ञा सूचक)

(च) राजू कल दिल्ली गया। (विस्मयादिबोधक)

(छ) तुम बहुत खुश हो। (भूतकाल)

प्रश्न 13. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण और विशेष्य छाँटकर अलग कीजिए -

(क) राजा के पास सफेद घोड़ा है।

(ख) नर्मदा का जल मीठा है।

(ग) राधा सुन्दर लड़की है।

(घ) सीमा के पास चार सन्तरे हैं।

(ड.) म.प्र. के उद्यान रमणीय हैं।

प्रश्न 14. सही जोड़ी बनाइए -

दादी की घड़ी	एकांकी
मध्यप्रदेश का वैभव	जीवनी
राखी का मूल्य	कहानी
गौरैया	वार्तालाप
मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान	निबन्ध
लोकमाता अहिल्याबाई	कविता
अगर नाक न होती	डायरी
ज्ञानदा की डायरी	व्यंग्य

प्रश्न 15. अपने शब्दों में लिखिए -

(क) अहिल्या बाई के जीवन की मुख्य विशेषताएँ।

(ख) अपनी दिनचर्या डायरी के रूप में।

(ग) एक छोटी लोक कथा।

(घ) किसी रोचक खेल का वर्णन।

(ड.) महाराजा अग्रसेन के जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

शब्दकोश

अं

अंजन = काजल

अन्तर = हृदय, भेद

अ

अक्षुण्ण = अखंडित

अग्रणी = आगे

अडिग = जो अपनी जगह से न डिगे, अटल

अति = ज्यादा, अधिक, बहुत

अन्याय = न्याय न होना

अनमने = उदास

अनुपम = जिसकी उपमा न हो

अपयश = बदनामी

अफसोस = दुःख, पश्चाताप, पछताना

अभिनन्दन = सम्मान

अविचल = अचल, स्थिर

अरण्य = वन, जंगल

अवकाश = छुट्टी, फुरसत, अंतराल

अस्त्र = हाथ से फेंककर चलाया जाने वाला हथियार

आहत = चोटिल, घायल

अजय = जिसे जीता न जा सके जिसे टाला न जा सके

अदम्य = जिसका दमन न किया जा सके

अन्तर्राज्यीय = दो या दो से अधिक राज्यों से सम्बन्धित

अपमान = तिरस्कार, बेइज्जती

अपेक्षित = जिसकी चाह या इच्छा की गई हो

अभय = भय रहित, जहाँ भय न हो

अम्ब = आम

अरगनी = कपड़े आदि बाँधने या टांगने के लिए रस्सी या लकड़ी, खूँटी

अलंकृत = सजी हुई

अस्तबल = घोड़ा बाँधने का स्थान

अहंकार = घमण्ड

अन्वेषक = खोजी, अन्वेषण करने वाला

आ

आकांक्षा = इच्छा

आक्रमण = लड़ना या वार करना, लड़ाई छेड़ना

आर्थिक = धन संबंधी

आभा = चमक

आशंका = अनिष्ट की शंका करना, दुखद घटना होने का विचार

आहिस्ता = धीरे-धीरे

आँख दिखाना = क्रोध

आखेटक = शिकारी

आन = गौरव

आमंत्रण = बुलावा

आस्था = आदर, विश्वास

आसरा = सहारा

इ

इत्मीनान = धैर्य पूर्वक

ई

ईर्ष्या = जलन, दूसरों की उन्नति देखकर जलना

उ

उक्ति	=	कही गई बात, कहावत	उच्छ्वास	=	लम्बी साँसें, गहरी साँसें
उत्सव	=	समारोह, पर्व	उपवन	=	बगीचा
उत्साह	=	हौसला, उमंग, शक्ति, ऊर्जा	ऊबरे	=	पार लगाना
उभय	=	दोनों	उदधि	=	समुद्र, सागर
उज्ज्वल	=	चमकीला, कांतिमय	उद्यम	=	उद्योग, परिश्रम
उद्यान	=	बगीचा, उपवन	उद्‌बोधन	=	सम्बोधन, बोलना
उबार	=	बचाए			

ए

एम.पी.	=	मेम्बर ऑफ पार्लियामेन्ट (संसद सदस्य)	एवज	=	बदले में
एहसान	=	उपकार	ऐलान	=	ऊँची आवाज में, सार्वजनिक रूप से घोषणा

ऊ

ऊहापोह	=	असमंजस, दुविधा

ऋ

ऋण	=	कर्ज, उधार, घटाने के लिए प्रयुक्त होने वाला गणित का चिह्न

औ

औकात	=	हैसियत

क

कटु	=	कठोर, कड़वा	कण्ठ	=	गला
कन्दुक	=	गेंद	कद्र	=	सम्मान
कयामत	=	प्रलय	करिश्मा	=	आश्चर्य, चमत्कार
करि	=	करना	करुणा	=	दया
कारस्तानी	=	शरारतपूर्ण कार्य	कारावास	=	बंदी होना, जेल की सजा
कलंक	=	दाग, धब्बा	कान्तिमान	=	चमकदार
कार्यक्रम	=	पूर्व निर्धारित क्रम के अनुसार कार्य	कामयाबी	=	सफलता
कायम	=	स्थिर	किक	=	पैर से मारना
कीमती	=	मूल्यवान	कीर्ति	=	यश
कुठार	=	कुल्हाड़ी	कुर्बानी	=	बलिदान
कूच	=	प्रस्थान	क्रूर	=	निर्दयी
कूटनीति	=	छलकपट की नीति	कृतज्ञ	=	उपकार मानने वाला
कैमरा	=	किसी वस्तु या प्राणी का चित्र खींचनेवाला यंत्र	कोप	=	क्रोध, गुस्सा
			क्षीणकाय	=	कमजोर शरीर

ख

खग	=	पक्षी
ख्याल	=	विचार
खिदमत	=	सेवा
खौफ	=	डर
खाक	=	धूल
ख्याति	=	प्रसिद्धि
खूँटी	=	कपड़े आदि टाँगने का स्थान

ग

गाइड	=	मार्गदर्शक, पर्यटन स्थलों पर घुमाने एवं जानकारी देने वाला
गर्व	=	घमंड, गौरव की भावना, अभिमान।

घ

घनेरी	=	बहुत घनी

च

चमन	=	बगीचा, उपवन
चार चाँद लगना	=	सुन्दरता बढ़जानाचुने जाने की प्रक्रिया
चुचकारति	=	पुचकारना, चुमकारना
चोथ	=	गाय, भैंस का गोबर
चयन	=	चुना जाना, चुनाव में
चुनौती	=	ललकार
चौतरफा	=	चारों तरफ

छ

छूटना	=	मुक्त होना
छलना	=	ठगना, धोखा देना
छपानी	=	छिपना

ज

जड़मति	=	मूर्ख, बुद्धिहीन
जलपान	=	नाश्ता, कलेवा, स्वल्पाहार
जायो	=	जन्म देना
जिजीविषा	=	जीने की इच्छा, जीवटता
जीवाश्म	=	जीवों या वनस्पति के वे अंश जो हजारों वर्ष-पूर्व भूमि में दबकर पत्थर बन गए
जीविका	=	रोजी-रोटी, जीवनयापन करने का साधन
जुवति	=	युवती
जनहित	=	जनता का हित, जनकल्याण
जलवायु	=	किसी स्थान विशेष की दीर्घकालीन औसत मौसमी दशा
जिह्वा	=	जीभ, रसना, जुबान

झ

झुरमुट	=	झाड़ियों का समूह

ट

ट्रंक	=	पेटी, बड़ा बक्सा
ट्रिप	=	बारी
टहनी	=	डाली, छोटी शाखा

ड

डिठौनाहिं	=	डिठौना, काजल का टीका
डुलाय	=	झूला झुलाना

ढ

ढिंग = पास, नजदीक, समीप

त

तूंबा	=	विशेष प्रकार की लौकी से बना पात्र, बर्तन	तज	=	त्यागना
			तमाशा	=	मनोरंजन पूर्ण खेल, दृश्य
तरकीब	=	उपाय	तरजीह	=	प्राथमिकता, वरीयता
तरसना	=	अभाव का अनुभव, दया, पाने की ललक	तरुवर	=	पेड़
तबका	=	वर्ग, समुदाय	ताकीद	=	समझाना, सचेत करना
ताका	=	देखा	ताज्जुब	=	आश्चर्य
तात	=	प्रिय, भाई, पिता, पुत्र	ताल्लुक	=	सम्बन्ध
तिरस्कार	=	अपमान	तृण	=	तिनका

द

दंड संहिता	=	सजा देने के नियमों की पुस्तक	दंगा	=	झगड़ा, उपद्रव
दखल	=	व्यवधान, हस्तक्षेप	दमक	=	चमक, कौंध
दम साधना	=	साँस रोकना, आराम करना	दल-दल	=	कीचड़ युक्त भूमि
दलना	=	कुचलना	दरख्वास्त	=	प्रार्थना, निवेदन
दर्शनीय	=	दर्शन के योग्य	दाऊ	=	बड़ा भाई, कृष्ण के बड़े भाई, बलराम
दाँत दिखाना	=	हीनता प्रकट करना	दामिनी	=	बिजली
दायित्व	=	जिम्मेदारी	दादुर	=	मेंढक
दुर्बल	=	कमजोर	दूरदर्शिता	=	आगे की सोचना
दिक्शूल	=	दिशा-बाधा, यात्रा के पहले दिशाओं के सम्बन्ध में शुभ-अशुभ का विचार			
दिग्गज	=	प्रकाण्ड, महान			
दिलचस्पी	‚	रुचि, शौक			
दिवा स्वप्न	=	दिन में स्वप्न देखना	देहाती	=	गाँव में रहने वाला
देशोन्नति	=	देश की उन्नति			

ध

ध्वज	=	झण्डा, पताका	धैर्य	=	धीरज

न

न्यायोचित	=	न्याय के अनुसार उचित	नक्काशी	=	बेलबूटे, चित्र बनाना
नवाकर	=	झुकाकर	नाहक	=	बिना हक के, अधिकार रहित
नर्तन/नर्तक	=	नृत्य, नाच/ नृत्य करने वाला	नाराज	=	गुस्सा, क्रोध

नाकदार = प्रतिष्ठा वाला, जो अपने आपको बड़ा प्रतिष्ठित मानता हो।

नाक रखना	= सम्मान रखना	नाक नीची होना	= अपमानित होना
		नाक बचाना	= सम्मान की रक्षा करना
नाकों चने चबानाृबहुत कष्ट सहना		नाक रगड़ना	= मिन्नतें करना
नाक फुलाना	= रूठना	नानी याद आना	= बड़े संकट में पड़ना

नाक पर मक्खी तक न बैठने देनाृ अपने विरूद्ध कुछ भी न सुनना

नाक के नीचे होना = उपस्थिति होना		नाक नचाना	= परेशान रहना
नाक रहना	= सम्मान बचा रहना	नाक का बाल	= बहुत प्रिय होना

नाकदार = प्रतिष्ठा वाला, जो अपने आपको प्रतिष्ठित मानता हो।

नाक नीची होना = अपमानित होना		नाक बचाना	= सम्मान की रक्षा करना
नाक रगड़ना	= मिन्नतें करना	निंदक	= बुराई करने वाला
निकम्मा	= आलसी, कामचोर	निर्मल	= स्वच्छ, साफ
निराशा	= जो हर आशा छोड़ चुका हो, हताश	निर्दय	= दुष्ट
निरपराध	= जिसका अपराध न हो	निरे	= बिल्कुल
निष्कासन	= हटाना, निकलना	निसर्ग	= प्रकृति
निवेदन	= प्रार्थना	नीड़	= घोंसला
नीरवता	= शान्ति	नैसर्गिक	= प्रकृति से संबंधित

प

पतझड़ी = वे वृक्ष जो विशेष ऋतु में अपने सभी पत्ते गिरा देते हैं

पथ	= राह, रास्ता, मार्ग	पथ्य	= रोगी को दिया जाने वाला भोजन
पर	= पंख	परवरदिगार	= खुदा, ईश्वर
परवाह	= चिन्ता	परिजन	= स्वजन, परिवार के लोग
परिणति	= परिणाम	परिवेश	= वातावरण
पर्यटक	= सैलानी, घूमने फिरने वाला	पर्यावरण	= वातावरण, परिवेश
पश्चाताप	= पछतावा	पान	= पीना, एक विशेष प्रकार का पत्ता या बेल
पार्थिव	= मिट्टी का, पृथ्वी से संबंधित		
पार्थिव	= मृत	पारंगत	= निपुण
पाहन	= पत्थर	पक्ष	= पंख, पांख, महीने का आधा भाग, तरफ
पुनि-पुनि	= बार-बार	पुनीत	= पवित्र, शुद्ध
पुरातत्व	= ऐतिहासिक, पुराना	पुरा वैभव	= प्राचीन-वैभव
पैगाम	= संदेश, खबर, सूचना	पैतान	= पाँव की तरफ

पोहिए = पिरोना

पौराणिक = पुराणों से संबंधित

पंक्ति = कतार

पाषाण = पत्थर

प्रगति = उन्नति, विकास

प्रजाति = नस्ल, किसी प्राणी का विशेष प्रकार

प्रणयन = रचना

प्रतिध्वनि = गूँज

प्रतिमा = मूर्ति

प्रतिबन्ध = बन्धन, रोक, मनाही

प्रतिबिम्ब = छाया, परछाई

प्रतिष्ठित = सम्मानित, प्रतिष्ठा प्राप्त

प्रतीक = चिह्न, संकेत

प्रदूषित = जो दूषित हो गया हो

प्रलेप = विशेष प्रकार का मरहम

पौन = पवन, तीन चौथाई

पंक = कीचड़

पंचतत्व = पाँच तत्व (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश)

प्रकांड = उत्तम, सर्वश्रेष्ठ

प्रगल्भता = चतुराई से साहसपूर्वक बोलना

प्रजातंत्र = जनता का राज

प्रत्युत्तर = उत्तर का उत्तर, उत्तर पाने पर दिया गया उत्तर

प्रतिबद्ध = बँधा हुआ, किसी कार्य के लिए संकल्पित

प्रतिनिधित्व = प्रतिनिधि का कार्य करना

प्रतिस्पर्धा = टक्कर, मुकाबला

प्रतीक्षा = इंतजार

प्रफुल्लित = खिला हुआ, प्रसन्न

प्रलोभन = लालच

प्रवासी = कुछ समय के लिए किसी दूसरे स्थान पर आने-जाने वाले प्राणी

प्रस्तर = पत्थर

प्राकृतिक = मनुष्य द्वारा न बनाई गई परिस्थिति, प्रकृति सम्बन्धी

प्रेरणा = उत्साहित करना, कार्य के प्रति उत्साहित करने की क्रिया

पीठ दिखाना= भागना

फ

फ़ख्र = गर्व

फिरंगी = अंग्रेज

फुरेरी = सींक व तिनके के सिरे पर लिपटी हुई रूई जिस पर इत्र, तेल आदि चुपड़ा जाता है।

फौलाद = इस्पात, मजबूत लोहा

ब

बलात् = बल पूर्वक

बाजी = दाव

बिंध = बिंधा हुआ

बाकायदा = नियमानुसार

बॉटनीकल = वनस्पति से सम्बन्धित

बेगार = उचित या बिना मजदूरी के काम कराना

बेशुमार = अगणित, जिसे गिना न जा सके

बोहनी = दुकानदार द्वारा प्रथम वस्तु बेचना, बीज बोना

भद्रा	=	एक नक्षत्र का नाम	भव्यता	=	सुन्दरता, विशालता
भविष्यत	=	आगे आने वाला	भस्म	=	राख
भात	=	विवाह के अवसर पर मामा की ओर से दी जाने वाली भेंट			
भाल	=	माथा, कपाल	भाष्यकार	=	टीकाकार
भीरु	=	डरपोक, भयभीत	भ्रातृत्व,	=	भाई-भाई से अपनापन
भौंन	=	भवन			

म

मंदाग्नि	=	पेट सम्बन्धी एक रोग जिसमें भूख कम लगती है			
मनोरम	=	सुन्दर, मन में रमने वाला			
मनोहारी	=	मन को अच्छा लगने वाला, मन को हरने वाला			
मनुष्यत्व	=	मानवता	मर्यादा	=	लोकनीति, रिवाज, सीमा
मान-धन	=	सम्मान की पूँजी	मुताबिक	=	अनुसार
मुलाहिजा	=	लिहाज, सम्मान देना	मुमकिन	=	संभव
मुसीबत	=	परेशानी, संकट	मुँह अंधेरे	=	सुबह के पहले का समय जब अंधेरा रहता है
मुहाल	=	कठिन			
मुहब्बत	=	प्यार, प्रेम	मुँह की खाना	=	घर जाना
माँज दो तलवार	=	युद्ध के लिए तैयार	मान न मान मैं तेरा मेहमान	=	जबरदस्ती करना
मेघ	=	बादल	मेहरबानी	=	कृपा, दया
मोह	=	ममता	मोक्षदायिनी	=	मोक्ष देने वाली

य

यंत्रणा	=	पीड़ा, यातना, अतिकष्ट	यथाअवसर	=	अवसर के अनुसार, उचित अवसर

र

रई	=	मथानी	रणभूमि	=	युद्ध की भूमि
रस्म	=	रीति रिवाज, परम्परा	रक्षी	=	रक्षा करने वाला
राष्ट्रीय उद्यान	=	वनों एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण हेतु बनाए गए सुरक्षित क्षेत्र			
रिजर्व	=	आरक्षित	रिस	=	क्रोध, गुस्सा
रीता	=	खाली	रोड़े	=	पत्थर, रुकावटें, बाधाएँ, मुसीबतें
रौब	=	प्रभाव			

ल

लख	=	देखना	लफ़्ज	=	शब्द
ललचाई	=	लालच से भरी	लस्त-पस्त	=	थका-हारा
लाड़ला	=	प्यारा	लूका	=	जलती हुई वस्तु या लकड़ी
लोकमाता	=	जगत माता			

व

वक्त	= समय	वज्राघात	= बहुत बड़ी चोट
वनस्पति	= विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे	वर्ण	= रंग, जाति, अक्षर
वाको	= उसका	वाचालता	= अधिक बोलना
वायवी	= हवा की, हवाई	वाराणसी	= बनारस, काशी
विकट	= कठिन, भयंकर, विशाल	विचरण	= घूमना
विख्यात	= प्रसिद्ध	विचलित	= अस्थिर, हटना, डिगना
विद्रोह	= विरुद्ध होना, विरोध करना	विरासत	= धरोहर
विलीन	= लुप्त, किसी वस्तु का दूसरी वस्तु में घुल मिल जाना	विलुप्त	= लोप होना, दिखाई न देना
		विषाद	= दुःख, पीड़ा
वशीकरण	= वश में करना	विवेकास्त्र	= बुद्धि का प्रयोग, बुद्धि रूपी अस्त्र
वैभव	= सम्पत्ति, सम्पन्नता	वैमनस्य	= बैर, दुश्मनी, मनमुटाव
व्यापक	= विस्तृत, फैला हुआ, बढ़ा	व्याख्यान	= भाषण
व्यूह	= जमावट, सैनिकों को युद्ध भूमि में विशेष रूप से खड़ा करना		

स

संचहि	= इकट्ठा करना	संजोग	= विशेष समय पर मिलना, संयोग
संतरण	= गति, गतिशीलता, तैरना	संवेदना	= समान दुःख, समान वेदना
संरक्षण	= नष्ट होने से बचाना, रक्षा करना	सज्जन	= अच्छा व्यक्ति
सत्पथ	= अच्छी राह	समर्थक	= पक्ष लेने वाला
सदय	= दयासहित	समर्पित	= पूरी तरह से भेंट कर देना
सल्तनत	= साम्राज्य	सराबोर	= डूबा हुआ, तरबतर, भीगा हुआ
सलोनी	= सुन्दर, अच्छी, नमकयुक्त	सहभागी	= बराबरी का हिस्सेदार, सहयोगी
समाधि	= मृत्यु के बाद बना हुआ स्मृति स्थल	समग्र	= सम्पूर्ण, पूरा
सरवर	= सरोवर, तालाब	सर्वस्व	= सब कुछ
साँचे	= एक प्रकार का ढाँचा, जिससे एक ही आकार-प्रकार की वस्तु बनाई जाए		
साबित	= सिद्ध	साहस	= हिम्मत
सार्वजनिक	= सबके लिए	सिरहाना	= सिर की तरफ पड़ने वाला चारपाई का हिस्सा
सिर खाना	= परेशान करना		
सिलसिला	= क्रम	सिल	= पत्थर
सुजान	= समझदार, सज्जन, सयाना	सुर में सुर मिलाना	साथ-साथ गाना, समर्थन करना
सुमन	= फूल, पुष्प	सुरभित	= सुगंधित
सुदीर्घ	= बहुत लम्बा	सुतवाँ	= लम्बी, पतली
सृजन	= रचना, किसी वस्तु का निर्माण करना	सैलानी	= पर्यटक, घूमने वाला

स्रोत	= धारा, साधन, उद्गम	सौगात	= भेंट
सोपान	= सीढ़ी	सौं	= कसम
स्तब्ध	= संज्ञाहीन, आश्चर्यचकित	स्नेह भाजन	= प्रेम पाने योग्य
स्फूर्ति	= तेजी, फुर्ती	स्पर्धा	= प्रतियोगिता
स्मृतियाँ	= यादें		

श

शख्स	= व्यक्ति	शब	= रात
शमशीर	= तेज, तलवार	शर	= बाण, तीर
शरीक	= सम्मिलित, शामिल होना	शरीरांत	= शरीर का अंत, मृत्यु
शालभंजिका	= विश्व प्रसिद्ध प्रतिमा	शिखर	= चोटी, पर्वत का ऊँचा भाग
शीश	= सिर	शैलाश्रय	= पर्वतों में आदिम मनुष्यों के आवास स्थल, गुफाएँ
शैल	= पत्थर, शिला, चट्टान		

ह

हेकड़ी	= अड़ना, अकड़	हठी	= जिद्दी
हताशा	= निराशा	हननकारी	= चोट पहुँचाने वाला
हमेलानि	= सोने का आभूषण जो गले में पहना जाता है		
हलकोरें	= हिलोरें	ह्रास	= गिरावट
हिफाजत	= सुरक्षा	हिमबिन्दु	= जमी हुई ओस, पाला, तुषार
हिल स्टेशन	= ठंडे मौसम वाला पर्वतीय स्थान	हिंसक	= कष्ट पहुँचाने वाला, हिंसा करने वाला
छाप के तोते उड़ना	=	घबरा जाना	
हुति	= थी		

क्ष

क्षीणकाय	= कमजोर शरीर	क्षोभ	= खेद, दुःख

अभ्यास-प्रश्न पत्र

समय - 3 घंटे

प्रश्न 1 (क) सही विकल्प चुनकर अपनी पुस्तिका में लिखिए-

(अ) कर्मवती..................की रानी थी।
(1) झाँसी (2) कालपी (3) मेवाड़ (4) इंदौर

(ब) अहिल्याबाई .... राज्य की महारानी थी -
(1) मराठा (2) होल्कर (3) चन्देल (परमार)

(स) दीपू पिकनिक के लिए .... जा रहा था -
(1) साँची (2) भोपाल (3) विदिशा (4) पचमढ़ी

(द) बुन्देली के पितृपुरुष माने जाते हैं -
(1) डॉ. हरिसिंह गौर (2) ईसुरी (3) भूषण (4) पद्‌माकर

(इ) 'अगर नाक न होती' पाठ .... विधा में लिखा गया है।
(1) कहानी (2) निबन्ध (3) जीवनी (4) व्यंग्य

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(अ) कवि के अनुसार .... का पेड़ कुल्हाड़ी को सुगंधित करता है।

(ब) डॉ अब्दुल कलाम को .... नाम से भी जाना जाता है।

(स) कृष्ण को .... खाना बहुत अच्छा लगता हैं ।

(द) राष्ट्रीय खेल दिवस .... को मनाया जाता हैं ।

(इ) किसी कविता को पढ़ते या सुनते समय हमें जो आनंद की अनुभूति होती है, उसे .... कहते हैं।

(ड) देवभूमि भारत को .... की क्रीड़ा स्थली कहा जाता है।

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

(अ) नेहरूजी ने किन जंजीरों को तोड़ देने के लिए कहा है?

(ब) हमें जीवों के प्रति किस तरह की भावना व्यक्त करना चाहिए?

(स) नाक को किस तरह का प्रतीक माना जाता है?

(द) नदी झरना क्यों बन गई ?

(इ) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए -
दृढ़ता, स्त्रोत, दृष्टी

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

(अ) मध्यप्रदेश को लघुभारत क्यों कहा गया है?

(व) खेलों से हम कौन-कौन से गुण सीखते है ?

(स) अनुप्रास अलंकार की विशेषताएँ बताते हुए एक उदाहरण लिखिए?

प्रश्न 4 (अ) निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश के क्रम में जमाकर लिखिए -

आशय, भण्डार, कठिनाई, अनुराग

(ब) 'सु' उपसर्ग जोड़कर चार नए शब्द बनाकर लिखिए।

(स) निम्नलिखित युगल शब्दों को एक ही वाक्य में प्रयोग कीजिए -
(1) दया - दयालु (2) विद्या - विद्यार्थी

(द) निम्नलिखित शब्दों की सन्धि विच्छेद कर सन्धि का नाम लिखिए -
जगदीश, पुस्तकालय

(क) 'आग' और 'रात' शब्दों के तत्सम रूप लिखिए ।

(ख) निम्नलिखित सामासिक पदों को विभक्त कर समास का नाम लिखिए-
देश निकाला, रसोई घर

(ग) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाकर लिखिए -
राखी, बहन, सड़क, कुत्ता

(घ) 'नानी याद आना' मुहावरे का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 5 निम्नलिखित में से किसी एक कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए -

छोटा जादूगर, हींगवाला, नरबदी

प्रश्न 6 निम्नलिखित गद्यांश के पाठ व लेखक का नाम लिखते हुए सरल अर्थ कीजिए-

नाक शरीर का सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग है। अगर चित्त लेटकर देखें तो यह बात अपने आप सिद्ध हो जाएगी कि हाथ, पाँव, मुँह, कान, आँख आदि में सबसे ऊँचा स्थान नाक को ही प्राप्त है। अगर आँख आ जाए या चली जाए तो ऐसी स्थिति में काला चश्मा लगाया जा सकता है। कान कट-फट जाए तो उसे कन्टोपा पहनकर छिपाया जा सकता है। लेकिन अगर कहीं नाक कट जाए तो चेहरा रेगिस्तान की तरह एकदम सपाट अथवा चक्की सा नजर आएगा।

प्रश्न 7 निम्नलिखित पद्यांश के पाठ व कवि का नाम बताते हुए सरल अर्थ लिखिए -

बाधाएँ, असफलताएँ तो आती हैं
दृढ़, निश्चय लख, वे स्वयं, चली जाती हैं।
जितने भी रोड़े मिले उन्हें ठुकराओ
पथ के काँटों को पैरों से दलना है।

अथवा

माँ तुम्हारा ऋण बहुत हैं, मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन,
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण ।

प्रश्न 8 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

पौराणिक ग्रंथों में नर्मदा परिक्रमा की बड़ी महिमा गाई है। भक्तजन प्रतिवर्ष भड़ौंच में मेरे मुहाने से मेरे तट के एक ओर किनारे-किनारे चलते-चलते मेरे मूल स्रोत अमरकंटक तक जाते हैं। वहां पूजा करके दूसरे तट के साथ-साथ चलते हुए वापस मेरे मुहाने तक भड़ौच वापस आते हैं। मैं बड़ी भाग्यवान हूँ कि मेरे तट पर अनेक ऋषि-मुनियों ने तप किया और अनेक आश्रम तथा मंदिर बनवाए। महेश्वर तीर्थ को अहिल्याबाई होल्कर ने राजधानी बनाकर मेरा महत्व बढ़ाया है।

(अ) उक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए ।

(ब) पौराणिक ग्रंथों में किसकी बड़ी महिमा गाई है ?

(स) महेश्वर तीर्थ का महत्व किसने बढ़ाया है ?

प्रश्न 9 अपने मित्र सुरेन्द्र को समाचार-पत्र पढ़ने का महत्व बताते हुए एक पत्र लिखिए।

अथवा

मलेरिया बुखार आ जाने के कारण तीन दिन के अवकाश हेतु प्रधानाध्यापक को एक प्रार्थना पत्र लिखिए।

प्रश्न 10 किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए -

सांकेतिक भाषा : सामान्य परिचय

सांकेतिक भाषा का उपयोग श्रवण बाधित व्यक्ति द्वारा संप्रेषण हेतु किया जाता है। वाक् के अभाव में श्रवण बाधित सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं। आमतौर पर लोगों की धारणा है कि सांकेतिक भाषा में व्याकरण का अभाव होता है परन्तु यह सही नहीं है, सांकेतिक भाषा में भी व्याकरण है। व्याकरण की दृष्टि से अमेरिकन सांकेतिक भाषा सबसे ज्यादा उन्नत है। अमेरिकन सांकेतिक भाषा फिंगर स्पेलिंग पर निर्भर है तथा वहां सिंगल हैण्डेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। इंडियन सांकेतिक भाषा में डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। आइयेए अब हम डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग जाने-